www.krishipravahika.com

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 1, 5-6

Article ID: 133

मूँगफली मे सफ़ेद गिड़ार का एकीकृत कीट प्रबंधन

ऋषभ मिश्रा[1], समीर कुमार सिंह[2], दीपक कुमार[1] एवं पुनीत कुमार[1]

[1]एमएस० सी० (कृषि) छात्र,
[2]सहायक प्राध्यापक,
कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
कुमारगंज, अयोध्या-224229 (उ०प्र०), भारत

मूँगफली भारतवर्ष में उगाई जाने वाली खरीफ ऋतु की मुख्य तिलहनी फसल है। परन्तु इसे सभी ऋतुओं में उगाया जा सकता है। मूँगफली का सबसे ज्यादा उत्पादन भारत के गुजरात राज्य में होता है। सफेद लट या गिड़ार कीट से मूँगफली में लगभग 20-80 प्रतिशत तक फसल उपज में कमी हो जाती है। इस कीट की रोकथाम करने के लिए एकीकृत कीट प्रबन्धन एक सरल एवं सस्ता उपाय है जो निम्न प्रकार है-

कीट की पहचानः- यह कीट गण कोलिओप्टेरा के मेलोलोन्थिडी परिवार में आता है। इसके जीवन चक्र में चार अवस्थायें होती है- अण्डा, ग्रब, कृमिकोष और प्रौढ़। ग्रब एवं प्रौढ़ फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। प्रौढ़ कीट प्रारम्भ मे क्रीमी रंग के होते हैं और बाद मे ये बाद में इनका रंग भूरा हो जाता है। ये कीट शाम को 7:30-8:30 के बीच मिट्टी से बाहर निकलते हैं और पोषक पौधों की पत्तियों को ऊपर से खाना प्रारम्भ कर देते हैं, सम्पूर्ण पौधों को पत्ताहीन कर देते हैं। ये रात्रि भर सक्रिय रहते हैं तथा सुबह 5:00-5:30 बीच मिट्टी मे चले जाते हैं। इसी प्रकार इस कीट का ग्रब सफेद रंग तथा "C" के आकार का होता है और ये मुख्यतः बलुई दोमट मिट्टी में 10-25 सेमी अंदर रहते है। यह पहले मूँगफली की जड़ो को खाते हैं तथा बाद मे फलियों एवं पत्तियों को भी खा जाते हैं। अधिक प्रकोप होने पर मूँगफली की शत-प्रतिशत फसल नष्ट हो जाती है।

सफ़ेद (लट) ग्रब से प्रभावित फसल

जीवन चक्रः- इस कीट की प्रौढ़ मादा मध्य मई और जून (वर्षा ऋतु) में मिट्टी में 10-15 सेमी अन्दर अण्डे देती है। ये अण्डे 7-10 दिनो मे परिपक्व हो जाते है जिससे लट (ग्रब) निकलते हैं जो प्रारम्भ में पौधों की जड़ो को खाते हैं और 2-3 दिन बाद ये फलियों को भी खाने लगते हैं । लट (ग्रब) 100-110 दिनो मे ये पूर्ण विकसित हो जाते हैं तथा पूर्ण विकसित लट (ग्रब) मिट्टी मे 20-40 सेमी नीचे जाकर कृमिकोष मे बदल जाते हैं। प्यूपा अवस्था 10-27 दिनो तक रहने के बाद प्रौढ़ निकलते हैं। जो वर्षा ऋतु मे पौधों की पत्तियाँ खाते हैं। एक साल मे इनकी एक ही पीढ़ी होती है।

प्रौढ कीट

युवा ग्रब

परिपक्व ग्रब

एकीकृत कीट प्रबंधन

1. प्रौढ़ कीटों (भृंगों) को जून-जुलाई मे प्रकाश प्रपंच के द्वारा आकर्षित करके मार देना चाहिए।
2. मई मे प्रथम बरसात के बाद कई बार गहरी जुताई करके अण्डा एवं छोटे-छोटे लटों (ग्रब) को नष्ट कर देना चाहिए।
3. मूँगफली के बीज की बुवाई 10-20 जून के मध्य करनी चाहिए।
4. मूँगफली के बीजो को सफेद ग्रब के खिलाफ स्थानिक क्षेत्रों में इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल० की 2.5 से 12.5 मिली. प्रति किग्रा. बीज के साथ बीज उपचार करना चाहिए।

प्रौढ़ भृंग का नियंत्रणः-

1. मई मे बारिश होने के बाद अपने खेत मे 1 प्रकाश प्रपंच प्रति हेक्टेयर के हिसाब से लगाए।
2. पहले मानसून के बाद पेड़ों पर 15 मी दूरी पर गंधपाश प्रपंच (सिंथेटिक फेरोमोन एनिसोल) लगातार 3 रातों मे लगाए।
3. पेड़ो एवं झड़ियों पर शाम के समय इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल० कीटनाशी 1.5 मिली. प्रति लीटर पानी मे मिलाकर छिड़काव करें।
4. पेड़ो के नीचे पड़े भृंगों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें।
5. कीटनाशक साइपरमेथ्रिन 2 मिली. लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से 8 से 10 दिन के अन्तराल में दो छिड़काव करें।

लट (ग्रब) का नियंत्रणः-

1. गर्मियों मे कई बार गहरी जुताई करके कीट के अंडे प्यूपा एवं लट को नष्ट कर देना चाहिए।
2. पूर्णतः सड़ी हुई गोबर की खाद का ही खेत मे प्रयोग करें क्योकि अधसड़ी खाद मे लट (ग्रब) बहुत तेजी से संख्या मे वृद्धि करते है।
3. बीज को हमेशा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल० की 2.5 से 12.5 मिली. प्रति किग्रा. बीज से उपचारित करके ही बुवाई करनी चाहिए।
4. यदि सिंचाई की उचित व्यवस्था हो तो बीज की बुवाई जल्दी ही करनी चाहिए।
5. कीटनाशकों जैसे थायामेथोक्सम 25 डब्ल्यूएस० की 1.9 लीटर प्रति हेक्टेयर या फिप्रोनिल 5एफएस० की 2.0 लीटर प्रति हेक्टेयर का बीज कुंडों में प्रयोग करना चाहिए।
6. अधिक प्रकोप होने पर फिप्रोनिल 0.3 जीआर० की 20-25 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करना चाहिए।